[Conference- Innovation in Music & Dance :January,2015] ISSN- 2350-0530(O) 2394-3629(P)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i1SE.2015.3430

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

'शास्त्रीय नृत्य में नवीन प्रयोग' : कथक एवं हवेली संगीत के पद

विनिता वर्मा
शोधार्थी
भावनगर –गुजरात

संगीत अर्थात् गायन, वादन और नृत्य अतिप्राचीन और ब्रह्मस्वरूप होने के कारण अलौकिक है । आद्यात्मिक संगीत जीवन को पवित्र बनाकर आत्मोन्नति द्वारा मोक्ष की ओर ले जानेवाला मार्ग है । नृत्य का आरंभ धर्म के मूल भाव से हुआ है । मनीषियों ने इसे परमानंद का आधार निरूपित किया है ।

नृत्य और गान को हमारे यहॉ, मोक्ष प्राप्ति का श्रेष्ठतम साधन बताया गया है । कथक नृत्य जिसका अन्य नाम ही 'नटवरी नृत्य' है, इसका द्योतक है कि कथक नृत्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए अधिकांशतः कृष्णचरित्र पर ही निर्भर है । यू तो कथक में परंपरागत अनेकों पद, ठुमरी, भजन इत्यादि पर भाव प्रदर्शन किया ही जाता रहा है किंतु कुछ वर्षो से कला के हर क्षेत्र में नवीन प्रयोग द्वारा अपनी अपनी कला का एक अपूर्व श्रृंगार कला साधकों द्वारा किया जा रहा है जिसे कला (प्रशंसकों) द्वारा भी सहर्ष सराहा एवं स्वीकारा जा रहा है । कथक नृत्य ने भी शास्त्र की सीमा में रहते हुए भाव प्रदर्शन के क्षेत्र में नित नवीन प्रयोग किये है ।

शास्त्रीय नृत्य में नवीन प्रयोग' सेमिनार के विविधि विषयों में से एक है जिसे मैंने अपने विचार व्यक्त करने हेतु चुना है । कथक में अभिनय क्षेत्र में किये जा रहे अनेक प्रयोग में से एक है कथक में हवेली संगीत के पदों का समावेष । पुष्टिमार्गीय अष्टछाप भक्त कवियों द्वारा रचित साहित्य में भावाभिनय की अनन्य संभावनाएं हैं । 'हवेली संगीत' वैसे तो कोई भी संगीत साधक इस शब्द से अनभिज्ञ ना होगा । गायन परंपरा में तो यह शब्द चिर परिचित है ही, उसका काव्य साहित्य भी इतना अद्‌भूत एवं विशाल है कि नृत्य परंपरा में उसका समायोजन कर कथक को प्रदर्शन हेतु विशाल साहित्य उपलब्ध की प्राप्ति कराई जा सकती हैं ।

हवेली संगीत की धारा यू तो हज़ारों वर्षो से बह रही है । मध्ययुग में लगभग 15 वीं शताब्दी में वल्लभचार्यजी ने पुष्टिसंप्रदाय की स्थापना की तदन्तर आपने व आपके पुत्र श्री विठ्ठलनाथजी ने सेवा संगीत द्वारा करने हेतु अष्टसंगीताचार्यो की स्थापना की । इन्होने नादब्रह्म स्वरूप संगीत द्वारा जनसमाज के हृदय में भगवान की शक्ति, कृपा और भक्ति के साथ आद्यात्मिक संगीत का अलौकिक स्त्रोत बहाया । अष्टछाप कवियों द्वारा रचित एवं गाया जानेवाला कीर्तन ही कालांतर में 'हवेली संगीत' कहलाया । इसकी अपनी एक निश्चित स्वरबध्धता, लयबध्धता एवं तालबध्धता होती है । इस प्रकार हवेली संगीत अपनी प्राचीन सुवर्ण आद्यात्मिक विरासत लिये है किंतु कथक नृत्य में या अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों में उसका प्रयोग कम ही हुआ है । निःसंदेह अष्टछाप भक्त कवि सुरदासजी के पदों का अधिकांशतः प्रयोग हर नृत्य शैली में किया जाता है । किंतु अष्टछाप के अन्य भक्त कवि परमानंददास, कुंभनदास, कृष्णदास, गोविंद स्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास उन महानुभावों ने भी आत्मानंद में लीन होकर जो भक्ति विद्यायिनी सरल रचना की, वह वास्तव में साहित्य में अनूठी देन है। इनमें अप्रतिम काव्य प्रतिभा देहानुसंधान रहित प्रेमोन्मत्तता, भाव तल्लीनता, स्वाभाविक त्याग और निःस्पृहता एवं श्री नाथजी के चरणों में पूर्ण भावानुरक्ति थीं । कथक परम्परा में कृष्णचरित की अभिव्यक्ति चार रूपों में हुई है वे हैं – कवित, छंद, गतभाव, ठुमरी भाव तथा पदाभिनय । अष्टछापीय भक्ति संगीत एवं काव्य में इन चारों ही अंगो को दर्षाती सुन्दर पदावलियां देखी जा सकती है, यही नहीं कथक के अनेक प्रायोगिक एवं सैध्धांतिक तत्वों को भी पुष्टीमर्गीय संगीत में देखा जा सकता हैं ।

इस तरह नृत्य से संबंधित पदों का विषयानुकूल प्रयोग कर नृत्य कला के भाव साहित्य में भी अभिवर्धन किया जा सकता हैं। अष्टछाप मे से कुछ भक्त कवि स्वयं संगीतज्ञ के साथ ही अच्छे नर्तक भी थे अथवा नृत्य का पूर्ण ज्ञान रखते थे । संगीत के तीनों अंगो से उन्हे लगाव था इसी कारण उसके अधिकतर पदों में तीन अंगो का समावेष दिखाई देता है और उसमें भी कथक नृत्य का प्रभाव तो स्पष्टतः अनेकानेक पदों में देखा जा सकता है । जिससे तत्कालीन समय में कथक नृत्य के प्रचलन का बोध होता है । उस समय के भक्त कवियों में गायन, वादन, नर्तन के प्रति अनुराग था इसीलिए उनके अधिकतर पदों में रासलीला की भावना दिखाई देती है । इनके पदों में गायन–वादन और नृत्य तीनों के पारिभाषिक शब्दों के उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलते हैं । कहीं कहीं तो उनके पदों में पढ़ंत पखावज और पदाघात (पद–संचालन) की जुगलबंदी का आशय दृष्टिगोचर होता है ।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

वैष्णव कीर्तन के अनेकानेक पद नृत्य युक्त गायन के लिए इन भक्त कवियों ने रचे है। इन परम भक्त कवियोंने ईश्वर की अनुभूति कर, जो सहज माधुर्य धारा अपने पदों द्वारा बहाई है, उन रचनाओं को यदि हम नृत्य में प्रयोग कर भक्ति के उस भावरंग को आत्मसात कर लें तो । इससे न केवल नृत्य का मूल उद्देश्य (ईश्वर उपासना) सिद्ध होता है बल्कि कथक के साहित्य कोष में भी इससे वृद्धि ही होगी । हवेली संगीत के पदों में नृत्य हेतु आवश्यक समस्त तत्व यथा रस, नायक नायिका भेद, ऋतु संबंधित वर्णन अभिनय हेतु विविध पद, यहां तक कि नृत संबंधित रचनाऐं आदि सभी का समायोजन इन कीर्तन पदों में किया गया है। विविध नायिकाओं के सूक्ष्म भावों का वर्णन इन पदों में अत्यंत सुंदर तरीके से किया गया है । प्रायः सभी नायिकाओं की छबि इन लीलापदों में प्राप्त होती है । पुर्वानुराग से रति केलि की प्रौढावस्था तक, नखशिख वर्णन से सोलह सिंगार तक नायिका भेद का कोई भी पक्ष इन पदों में छूट नहीं पाया है । (राधा–कृष्ण एवं गोपियों का हर ऋतु के अनुसार लीला विलास इन पदों में वर्णित है, विशेषकर वर्षा में झूलन विहार और बसन्त विहार) इनके अतिरिक्त कथक अभिनय के विविध आयाम यथा ठुमरी, ध्रुपद, धमार, होरी, कजरी, झूलागीत, स्तुति, वंदना, भजन, प्रिमलू, कवित आदि समस्त तत्व इन पदो के अध्ययन करने पर दृष्टिगोचर होते है । ये ही पद रासलीला के आधार बने और कथक के भी । इन पदों का अध्ययन करने से सहज ही ऐसा लगता है मानो इन्हे नृत्य के लिए ही बनाया गया है । भारतीय संगीत शास्त्रों में राग एवं रस, काव्य एव नायक–नायिका भेद, स्वर एवं रस आदि का संबंध बताया गया है। ऐसा बताया गया है कि जैसे नायक नायिका भेद का काव्य तत्व से प्रगाढ संबंध है वैसा ही राग का भी संबंध होना चाहिए।

अष्टछाप कवियों ने एवं इस परंपरा में समाविष्ट अन्य भक्त कवियों ने अपने कीर्तनों में विभिन्न नायक नायिका भेदों का अत्यंत सुंदर समावेष किया है । हवेली संगीत के पदों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि लगभग सभी अष्टनायिकाओं की मनोगत स्थितियों का अत्यंत मनोरम चित्रण अष्टछाप कवियों द्वारा किया गया है । यही नही कहीं कहीं नायक–भेद का वर्णन भी प्राप्त होता है । इन पदों में नायक केवल श्यामसुंदर श्रीकृष्ण हैं । परात्पर परब्रह्म श्रीकृष्ण एक होते हुए भी 'एकोऽहं बहुस्याम' इस श्रुति वाक्य के अनुसार अपने स्वरूप में नायक भेद के कई स्वरूप प्रकट करते हैं । इसलिए पदों में श्रीकृष्ण को बहुनायक के नाम से संबोधित किया गया है । राधिकाजी के साथ निष्चित भाव से नृत्य करते हुए परमानंददासजी का यह पद जिसमें भगवान कृष्ण की छबि इस प्रकार दर्षायी गयी है –

निर्तत मंडल मध्य नंदलाल ।।
मोर मुकुट मुरली पितांबर
गरे गुंज बनमाला ।।
ताल मृदंग संगीत बजत है
ततथेई बोलत बाल ।।

क्रिया चतुर नायक का एक उदाहरण हवेली संगीत के पदों में इस प्रकार मिलता है –

काहेकूं तुम प्यारे सखी भेश कीनो ।
भूषण वसन साजें वीना करलीनो ।।
रूसवेको नेम नित्य प्यारी तुम लीनो ।
तही के कारण हम सखि भेषकीनो ।।

अष्टछाप महाकवियों ने एवं परंपरा में समाविष्ट अन्य भक्त कवियों ने अपने कीर्तनों में अष्टनायिका तथा अन्य नायिका भेदों का अत्यंत सुंदर वर्णन किया है । अष्टछाप के विविध पद अष्टनायिकाओं के विविध सूक्ष्म भावों को भी वर्णित करते है ।

प्रोषितपतिका नायिका का चित्रण इस प्रकार किया गया है –

रितु पलटी मौंसों रह्यो न जाय ।
मधुकर माधो सों कहीयो जाय ।।
बहुवास सुबास फूली है बेलि ।
अरू बने कोकिला करति केलि ।।
मधुप तापतन, सह्यो न जाय ।
पिय, प्रान गये कहा करहो आय ।।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

कृष्णदासजी द्वारा रचित एक अन्य पद जिसमें खण्डिता नायिका को इस प्रकार दर्शाया है –

ऐसी कौन नागरी जिन कुंज में बसाये ।।
अरूण उदय तमचर को बोल सुन,
काहे को अरबराय उठ धाये ।।
सुधिकर देख कहां पीयरो पट,
सुमग कुंकुम उर लपटाये ।।
पीठ वलय के चिन्ह विराजत,
ढांप लेहु जो आछे बनि आये ।।
वदन बिंदु सुयश को टीको,
सुरत जीत रणधीर कहाये ।
कृष्णदास प्रभु गिरधर नागर, पोढ रहो निष बहुत जगाये ।।

स्वाधीनपतिका नायिका का एक और उदाहरण जिसमें कृष्ण राधा का श्रृंगार अपने हाथों से कर रहें है –

पिय प्यारी के करत सिंगार ।
सरस सुंदर फुलेल लगावत कोमल कर संमारत बाल ।
पीतकुसुम सिर बेनी गूँथी सिंदूर मांगजो भरत समार ।
टेढ़ी लट लटकन लटकन पर गालित कुसुम सिर भार ।।
लहेंगों कटितट क्षुद्र घंटिका अंगिया पर गज मोतिन हार ।।

दिवाभिसारिका नायिका का एक उदाहरण –

बहोरि डफ़ बाजन लागे हेली ।।
खेलत मोहन सौंवरो हो किहिंमिस देखन जाय ।
सास ननद वैरिन भई अबकिजे कोन उपाय ।
ओजत गागर ढ़ारीये यमुना जल के काज
आओ बछरा मेलियें वनकों देहि विडार
यह मिस बाहिर निकसकें हम जाय मिले तजि लाज ।

अष्टछाप भक्त कवियोंने लगभग सभी रसों का समावेष अपनी रचनाओं में किया है । श्रृंगार रस, वात्सल्य रस की तो भरपूर रचनाऐं प्राप्त होती है । उसमें भी नृत्य के लिए जो पूर्णतः उपर्युक्त है ऐसी कुछ रचनाओं के उदाहरण इस प्रकार है ।

संभोग श्रृंगार का एक उदाहरण इस प्रकार है जिसमें नायिका, अपने प्रिय का रूप देखकर उस पर बलिहारी जा रही है, उसके दर्षन से उसका हृदय प्रफुल्लित हो रहा है उसके नैना सतत उस रूप रस को पीकर भी तृप्त नहीं हो रहे है ।

सुभग सिंगार निरखि मोहन को,
लै दरपन कर पिय ही दिखावै ।।
बार–बार पुलकित तन सुंदरि,
फूलनि रचि रचि पाग बनावै ।।
''चत्रभुज'' प्रभु गिरिधर को रूप रस,
पिबत नैन पुट तृप्ति न पावैं ।।

करूण रस का उदाहरण :

ब्रज के बिरही लोग बिचारे,
बिना गोपाल ढगे से ढाड़े, अति दुरबल तन हारे ।।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

यह मथुरा काजरकी रेखा, जो निकले सो कारे,
जे कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत, अखियन बहत पनारे ।।

वात्सल्य रस का एक उदाहरण जिसमें माता यषोदा अपने नंदलाल को नहलाकर प्रेम से तैयार कर रही है, उनका सुंदर श्रृंगार कर उन्हें अन्य बालकों के साथ खेलता देख हर्षित हो रही है –

करत श्रृंगार मैया मन भावत ।
सीतल जल उष्ण कर राख्यो ले लालन को बैठ न्हावत ।।
अंग अंगोछ चौकी बैठारत प्रथमही ले तनिया पहरावत ।
देखो मेरे लाल और सब बालक घर घर तें कैसे बन आवत ।

भक्तिरस का एक उदाहरण :

वृंदावन क्यों न भये हम मोर ।
करत निवास गोवर्धन उपर निरखत नंदकिषोर ।।
क्यों न भये बंसीकुल सजनी अधर पिबत घनघोर ।
क्यों न भये गुंजा बनवेली रहत श्यामजु की ओर ।।
क्यों न भये मकराकृत कुंडल श्याम श्रवण अफसोस
परमानंददास को ठाकुर गोपिन के चित चौर ।।

हवेली के पदों में अनेक कवित्त एवं प्रिमलु के समान पद भी प्राप्त होते है । प्रिमलु का उदाहरण :

बाजत मृदंग उघटित सुधंग तक्कझं तक्कजं,
घुमकिटता घुमकिट घुमकिट धिलांग तक,
द्रगदा द्रगदा धिन्न दाना दनन,
'कृष्णदास' प्रभु पास पूरन भई आस,
नृत्य करत रस विलास,
थोदिंग थोदिंग तक थुंग तक थुंग तक ।।

एक कवित्त का उदाहरण इस प्रकार है :

गोकुल की पनिहारी पनिया भरन चली,
बड़े बड़े नयना तामे शोभ रह्यो कजरा ।।
पहिरे कसुंबी सारी अंग अंग छबि भारी,
गोरी गोरी बहियन में मोति के गजरा ।।
सखी संग लिये जात हॅस हॅस बूझत बात,
तनहूकी सुधि भूली सीस घरें गगरा ।।
नंददास बलहारी बिच मिले गिरधारी,
नैनन की सेनन में भूल गई डगरा ।।

इस प्रकार यह निश्चित ही कहा जा सकता है कि, हवेली संगीत एवं उसका साहित्य कला जगत की एक संमृद्ध सम्पत्ति है । जिसे अधिक से अधिक प्रतिष्ठत किया जाना चाहिए। इस संमृध्ध परंपरा से नृत्य जगत भी लाभान्वित हो यही मेरा प्रयास रहा है । निःसंदेह कथक में भाव प्रस्तुति में परंपरागत पदो के प्रयोग के साथ–साथ इस प्रकार के नये प्रयोगो का समावेश कर उसके परमपरागत भाव–सौंदर्य के कोष में वृद्धि की जा सकती है । साथ ही भक्ति की इस अविरत धारा की कुछ बूंदो को आत्मसात कर नृत्य के इस महान उद्देश्य जिसे ईश्वर उपासना का तथा उस अलौकिक आनंद को पाने का माध्यम माना गया है, की प्राप्ति की जा सकती है ।